॥ श्री गणेशाय नमः॥

हिन्दी पाक्षिक Fortnightly

Baat Hindustan ki

बात हिन्दुस्तान की

Baat Hindustan ki

RNI No.: WBHIN/2021/84049

विक्रम संवत 2083, आश्विन मास, कृष्ण पक्ष पंचमी, 01-15 अक्टूबर 2026 (01-15 October 2026), वर्ष-6 (YEAR-6), अंक - 11, पृष्ठ - 4, मूल्य - ₹2, (PRICE- 2/-)

तीन सदियों से पूजी जा रहीं दो हाथों वाली मां दुर्गा

अजय कुमार झा, हावड़ा: 'अभया' दुर्गा से लेकर सदियों पुरानी परंपराएं-हावड़ा के शिबपुर में पॉल परिवार के घर आज भी संरक्षित है बंगाल की पाल घराने की दुर्गापूजा का अनूठा अध्याय सुनने में भले ही यह असामान्य और आज के समय से अलग लगे, लेकिन शिबपुर के इस परिवार की दुर्गापूजा में आज भी परंपरा के अनुसार नवमी के दिन महिष बलि दी जाती है। हर साल की तरह इस साल भी यह परंपरा जारी है और प्रशासन की ओर से इसमें कोई बाधा नहीं दी गई। प्रसिद्ध बंगाली फार्मासिस्ट बुद्धो कृष्ण पॉल, जिन्हें बाटा कृष्ण पॉल (बी.के. पॉल) के नाम से भी जाना जाता है, ब्रिटिश काल में बंगाल में काफी प्रसिद्ध हुए थे। उस समय भारत में पश्चिमी दवाइयां आसानी से उपलब्ध नहीं थीं। ऐसे समय में उनका कारोबार धीरे-धीरे बढ़ा हुआ और उन्होंने विदेशों से पश्चिमी दवाइयां आयात करने के साथ-साथ उनका निर्माण भी शुरू किया।

हालांकि उनका मूल घर उत्तर कोलकाता में स्थित है, लेकिन बी.के. पॉल की जड़ें हावड़ा के शिबपुर की एक पुरानी गली से जुड़ी हैं। यहीं पॉल परिवार पिछले 300 वर्षों से भी अधिक समय से दुर्गापूजा करता आ रहा है। परिवार के अनुसार, शिबपुर स्थित पॉल परिवार के पैतृक घर की दुर्गापूजा करीब 300 वर्ष पुरानी मानी जाती है, बल्कि यह इससे भी पुरानी हो सकती है। हालांकि पूजा की शुरुआत किस वर्ष हुई थी, इसका कोई निश्चित लिखित प्रमाण उपलब्ध नहीं है। इसलिए तीन शताब्दी पुरानी इस पूजा का दावा मुख्य रूप से परिवार की लंबे समय से चली आ रही मौखिक परंपरा और वंशावली पर आधारित है।

इस परिवार की दुर्गापूजा की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यहां मां दुर्गा की पूजा दस भुजाओं वाले स्वरूप में नहीं, बल्कि 'अभया' रूप में की जाती है। अभया स्वरूप में मां दुर्गा शांत और द्विभुजा हैं। उनका उठा हुआ हाथ भक्तों के लिए सुरक्षा, शांति और भयमुक्ति का प्रतीक माना जाता है।

परिवार के अनुसार, "मां के साथ महिषासुर की प्रतिमा नहीं होती। देवी सिंह पर विराजमान रहती हैं। मां का यह द्विभुजा स्वरूप बंगाल की पारंपरिक बनर्जी घराने की दुर्गापूजाओं में इस प्रतिमा को विशेष रूप से अलग पहचान देता है।"

इस पूजा के अनुष्ठानों में भी कई प्राचीन परंपराएं आज तक संरक्षित हैं। परिवार के सदस्य बताते हैं, "परंपरा के अनुसार रथयात्रा के दिन काठामो पूजा के साथ प्रतिमा निर्माण की शुरुआत होती है। परिवार के ठाकुरदालान में ही प्रतिमा तैयार की जाती है। एक और खास परंपरा कृष्ण नवमी के दिन देवी का बोधन करना है। यह पूजा शाक्त परंपरा का अनुसरण करती है और सधि पूजा में तांत्रिक प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई देता है। अष्टमी के दिन धुनो पोड़ानो की परंपरा भी कभी घर की महिलाएं निभाती थीं। उस समय पड़ोस की महिलाएं भी इसमें शामिल होती थीं।"

सप्तमी की सुबह नवपत्रिका स्नान की परंपरा भी इस परिवार में अलग तरीके से निभाई जाती है। इसके लिए नदी के घाट पर जाने के बजाय घर के परिसर में ही यह अनुष्ठान किया जाता है।

देवी को दिए जाने वाले भोग की भी अपनी विशेष परंपरा है। परिवार के अनुसार, "पारंपरिक चावल के भोग के बजाय इस परिवार में लूची, विभिन्न प्रकार की मिठाइयां और फल अर्पित किए जाते थे।" परिवार के सदस्य आगे बताते हैं, "इस पूजा के इतिहास में पशु बलि भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। पुराने दस्तावेजों में सप्तमी, अष्टमी और नवमी के दिन बलि का उल्लेख मिलता है। नवमी के दिन महिष और बकरे की बलि दिए जाने की परंपरा का भी उल्लेख मिलता है, जिसे आज भी निभाया जाता है। हालांकि पुराने दस्तावेजों में वर्णित सभी अनुष्ठान वर्तमान समय में ठीक उसी तरीके से जारी हैं या नहीं, यह निश्चित रूप से कहना संभव नहीं है।"

बाद में बी.के. पॉल उत्तर कोलकाता के दूसरे घर में चले गए, लेकिन परिवार के मुखिया की जिम्मेदारी संभालने के बाद 19वीं सदी में इस दुर्गापूजा की प्रसिद्धि और बढ़ी।

आज भी यह परंपरा 2026 में जारी है। हालांकि अब श्रद्धालु इस स्थान पर बी.के. पॉल के परिवार की विरासत को देखने के साथ-साथ 'अभया' देवी के दर्शन और पूजा के लिए पहुंचते हैं। मां दुर्गा का ऐसा द्विभुजा स्वरूप हावड़ा और कोलकाता में बेहद कम देखने को मिलता है।

'सारथी' योजना का शुभारंभ

बच्चों संग मिड-डे मील में शामिल हुए शुभेंदु

हावड़ा: हावड़ा के बेंटरा थाना अंतर्गत मधुसूदन पाल चौधरी स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने राज्य के कई स्कूलों के लिए सारथी योजना का शुभारंभ किया। इस योजना के तहत विद्यार्थियों को स्कूल आने-जाने के लिए साइकिल उपलब्ध कराई जा रही है।

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने स्कूल की शैक्षणिक एवं आधारभूत व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने मिड-डे मील की व्यवस्था का भी निरीक्षण किया और बच्चों के साथ बैठकर मिड-डे मील का भोजन किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों को मोबाइल फोन से दूर रखने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पिछली सरकार की ओर से 11वीं कक्षा के विद्यार्थियों को मोबाइल खरीदने के लिए दी जाने वाली 11 हजार रुपये की राशि की व्यवस्था को बंद कर अब एजुकेशन टैब देने की योजना बनाई जा रही है। उन्होंने कहा कि भले ही इस व्यवस्था में 10 हजार रुपये अधिक खर्च हों, लेकिन बच्चों को मोबाइल से दूर रखते हुए शिक्षा के लिए टैब उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाएगी। मुख्यमंत्री ने साइकिल वितरण योजना को लेकर भी पिछली व्यवस्था पर सवाल उठाए। उन्होंने आरोप लगाया कि पहले विद्यार्थियों को दी जाने वाली साइकिलें लुधियाना से आती थीं और यहां लाकर उन्हें असेंबल किया जाता था। मुख्यमंत्री के अनुसार, इस काम से जुड़ी पिछली व्यवस्था को बंद कर दिया गया है और सरकारी धन की बर्बादी रोकने पर जोर दिया जाएगा।

वहीं, मधुसूदन पाल चौधरी स्कूल के प्रधान शिक्षक ने बताया कि कार्यक्रम पहले से निर्धारित था और इसी कार्यक्रम के माध्यम से यहां से सारथी योजना की शुरुआत की गई। इस दौरान विद्यार्थियों को साइकिलें वितरित की गईं। उन्होंने कहा कि स्कूल एक पुराना और ऐतिहासिक शिक्षण संस्थान है तथा इसे और बेहतर मॉडल स्कूल के रूप में विकसित करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। मुख्यमंत्री के बच्चों के साथ बैठकर मिड-डे मील करने को लेकर प्रधान शिक्षक ने बताया कि आज भी रोजाना के निर्धारित मेनू के अनुसार ही भोजन तैयार किया गया था। मेनू में भात, दाल, आलू-सोयाबीन की सब्जी और चटनी शामिल थी। हालांकि, रोज की तुलना में भोजन कुछ अधिक मात्रा में तैयार किया गया था। मुख्यमंत्री समेत सभी ने बच्चों के साथ बैठकर भोजन का आनंद लिया।

अगर आप किसी दुर्गापूजा कमिटी के सदस्य हैं और आपकी कमिटी इस दुर्गापूजा में कुछ अनोखा या विशेष आयोजन कर रही है, तो इसकी पूरी जानकारी 'बात हिंदुस्तान की' अखबार के साथ साझा करें।

ई-मेल: www.baathindustanki@gmail.com, संपर्क: 9798848926

सत्ता बदली, हावड़ा में बढ़ी दुर्गा पूजा की धूम

कमिश्नरेट इलाके में पूजा आयोजनों की संख्या बढ़ी, आयोजकों में उत्साह

सोनी कु. झा: राज्य में सत्ता परिवर्तन के बाद हावड़ा पुलिस कमिश्नरेट क्षेत्र में इस वर्ष दुर्गा पूजा की संख्या में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। आगामी दुर्गा पूजा को लेकर सोमवार को हावड़ा के शरत सदन में समन्वय बैठक आयोजित की गई। बैठक में हावड़ा कमिश्नरेट क्षेत्र की विभिन्न पूजा समितियों के प्रतिनिधि शामिल हुए।

बैठक में जिलाधिकारी पी. दीपाप्रिया, पुलिस आयुक्त अखिलेश चतुर्वेदी के अलावा सीईएससी और दमकल विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, पिछले वर्ष हावड़ा कमिश्नरेट क्षेत्र में कुल 1,476 दुर्गा पूजा आयोजित हुई थीं। इस वर्ष इसमें करीब 350 पूजा और जुड़ने की संभावना है।

पुलिस की ओर से बताया गया कि पूजा की अनुमति सरकारी पोर्टल के माध्यम से दी जा रही है।

साथ ही पूजा आयोजकों के लिए कई नियम और दिशा-निर्देश भी जारी किए गए हैं। किसी भी पूजा समिति द्वारा जबरन चंदा वसूली या दबाव बनाकर चंदा लेने की अनुमति नहीं होगी।

पुलिस के अनुसार, विसर्जन के दौरान डीजे बजाने पर रोक रहेगी। इसके अलावा विसर्जन के लिए क्रेन के इस्तेमाल की भी अनुमति नहीं होगी। आयोजकों से कहा गया है कि लक्ष्मी पूजा के भीतर ही प्रतिमा विसर्जन की प्रक्रिया पूरी करनी होगी।

पुलिस प्रशासन ने सभी पूजा समितियों से आपसी समन्वय बनाए रखने की अपील की है। वहीं, इस बार दुर्गा पूजा पंडालों के आसपास मांसाहारी भोजन नहीं करने को लेकर भी तरह-तरह की चर्चाएं सामने आई हैं। इसे लेकर विवाद भी शुरू हो गया है।

हालांकि, इस संबंध में कोई सरकारी दिशा-निर्देश जारी हुआ है या नहीं, इस सवाल पर पुलिस आयुक्त अखिलेश चतुर्वेदी ने कोई टिप्पणी नहीं की।

बारिश में हावड़ा की सड़कों का बुरा हाल

महालया से पहले मरम्मत का आश्वासन

बारिश में हावड़ा नगर निगम क्षेत्र की अधिकांश सड़कें जर्जर हालत में हैं। सड़कों पर जगह-जगह बड़े-बड़े गड्ढे बन गए हैं। स्थानीय लोगों का आरोप है कि सड़कों की मरम्मत नहीं होने के कारण आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं। हालांकि हावड़ा नगर निगम ने महालया से पहले सभी जर्जर सड़कों की मरम्मत कराने का आश्वासन दिया है।

हावड़ा नगर निगम के 50 वार्डों में से अधिकांश इलाकों में सड़कें टूट-फूट गई हैं। मुख्य सड़कों के साथ-साथ गलियों की भी स्थिति खराब है। बारिश के कारण अधिकतर सड़कें बड़े-बड़े गड्ढों और खड्डों से भर गई हैं। इन गड्ढों में पानी जमा होने से स्थिति और भी खतरनाक हो गई है। सालकिया, घुसुड़ी, लिलुआ, टिकियापाड़ा, बेलगछिया, हावड़ा मैदान, बंकिम सेतु और हावड़ा स्टेशन इलाके में भी सड़कों की यही तस्वीर देखने को मिल रही है।

कई जगहों पर सड़क की ऊपरी परत उखड़ गई है और छोटे-बड़े असंख्य गड्ढे बन गए हैं। कुछ स्थानों पर हावड़ा नगर निगम की ओर से पेवर ब्लॉक लगाकर अस्थायी रूप से सड़क की मरम्मत करने की कोशिश की गई थी। लेकिन पेवर ब्लॉक भी खिसक जाने से वहां स्थिति और खतरनाक हो गई है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि इसके कारण साइकिल, टोटो और ऑटो के पलटने से दुर्घटनाएं हो रही हैं।

स्थानीय लोगों का यह भी आरोप है कि वे कई बार हावड़ा नगर निगम को सड़कों की खराब स्थिति की जानकारी दे चुके हैं, लेकिन अब तक स्थायी समाधान नहीं हुआ। इससे उनकी परेशानी लगातार बढ़ रही है।

हालांकि, हावड़ा नगर निगम की ओर से महालया से पहले सड़कों की मरम्मत कराने का आश्वासन दिया गया है। राज्य के लोक निर्माण एवं नगर विकास विभाग के राज्य मंत्री उमेश राय ने कहा कि नगर निगम क्षेत्र की 100 सड़कों के लिए टेंडर पास हो चुका है। बारिश कम होते ही पूरी गति से सड़कों की मरम्मत का काम शुरू किया जाएगा। उन्होंने आश्वासन दिया कि महालया तक शहर की सभी जर्जर सड़कों की मरम्मत कर दी जाएगी।

Memo no. 849(9) /Local Advt/DICO/Hwh

महात्मा गांधी स्वतंत्र भारत के पिता

भारत के राष्ट्रपिता मोहनदास कर्मचंद गांधी जिन्हें बापू या महात्मा गांधी के नाम से भी जाना जाता है, के जन्म दिन 2 अक्टूबर को गांधी जयंती के रूप में मनाया जाता है। इस दिन को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। वस्तुतः गांधीजी विश्व भर में उनके अहिंसात्मक आंदोलन के लिए जाने जाते है, और यह दिवस उनके प्रति वैश्विक स्तर पर सम्मान व्यक्त करने के लिए मनाया जाता है।

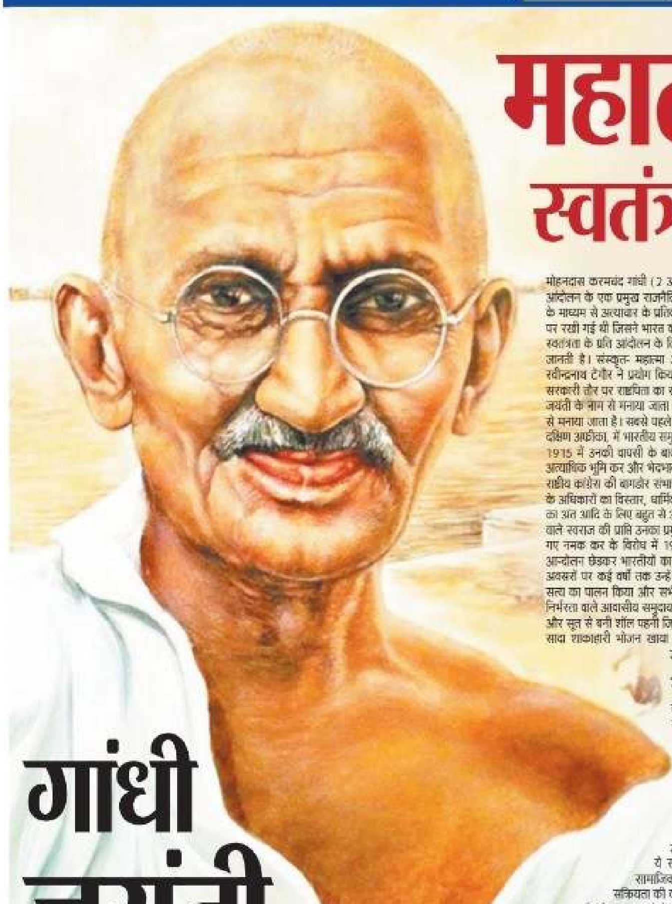

मोहनदास करमचंद गांधी (2 अक्टूबर 1869 – 30 जनवरी 1948) भारत एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। वे सत्याग्रह – व्यापक सविनय अवज्ञा के माध्यम से अत्याचार के प्रतिकार के अग्रणी नेता थे, उनकी इस अवधारणा की नींव संपूर्ण अहिंसा पर रखी गई थी जिसने भारत को आजादी दिलाकर पूरी दुनिया में जनता के नागरिक अधिकारों एवं स्वतंत्रता के प्रति आंदोलन के लिए प्रेरित किया इन्हें दुनिया में आम जनता महात्मा गांधी के नाम से जानती है। संस्कृत: महात्मा अथवा महान आत्मा एक सम्मान सूचक शब्द जिसे सबसे पहले रवीन्द्रनाथ टैगोर ने प्रयोग किया और भारत में इन्हें बापू के नाम से भी याद किया जाता है। उन्हें सरकारी तौर पर राष्ट्रपिता का सम्मान दिया गया है 2 अक्टूबर को उनके जन्म दिन राष्ट्रीय पर्व गांधी जयंती के नाम से मनाया जाता है और दुनियाभर में इस दिन को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के नाम से मनाया जाता है। सबसे पहले गांधी ने रोजगार अहिंसक सविनय अवज्ञा प्रवासी वकील के रूप में दक्षिण अफ्रीका, में भारतीय समुदाय के लोगों के नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष हेतु प्रयुक्त किया। 1915 में उनकी वापसी के बाद उन्होंने भारत में किसानों, कृषि मजदूरों और शहरी श्रमिकों को अत्यधिक भूमि कर और भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए एकजुट किया। 1921 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बागडोर संभालने के बाद गांधी जी ने देशभर में गरीबी से राहत दिलाने, महिलाओं के अधिकारों का विस्तार, धार्मिक एवं जातीय एकता का निर्माण, आत्म-निर्भरता के लिए अस्पृश्यता का अंत आदि के लिए बहुत से आंदोलन चलाए। किंतु इन सबसे अधिक विदेशी राज से मुक्ति दिलाने वाले स्वराज की प्राप्ति उनका प्रमुख लक्ष्य था। गांधी जी ने ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों पर लगाए गए नमक कर के विरोध में 1930 में दांडी मार्च और इसके बाद 1942 में, ब्रिटिश भारत छोड़ो आन्दोलन छेड़कर भारतीयों का नेतृत्व कर प्रसिद्धि प्राप्त की। दक्षिण अफ्रीका और भारत में विभिन्न अवसरों पर कई वर्षों तक उन्हें जेल में रहना पड़ा। गांधी जी ने सभी परिस्थितियों में अहिंसा और सत्य का पालन किया और सभी को इनका पालन करने के लिए वकालत भी की। उन्होंने आत्म-निर्भरता वाले आवासीय समुदाय में अपना जीवन गुजारा किया और परंपरागत भारतीय पोशाक धोती और सूत से बनी शॉल पहनी जिसे उसने स्वयं ने चरखे पर सूत कात कर हाथ से बनाया था। उन्होंने सादा शाकाहारी भोजन खाया और आत्मशुद्धि तथा सामाजिक प्रतिकार दोनों के लिए लंबे-लंबे उपवास भी किए।

गांधी दक्षिण अफ्रीका में (1895)

दक्षिण अफ्रीका में गान्धी को भारतीयों पर भेदभाव का सामना करना पड़ा। आरम्भ में उन्हें प्रथम श्रेणी कोच की वैध टिकट होने के बाद तीसरी श्रेणी के डिब्बे में जाने से इन्कार करने के लिए ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया था। इतना ही नहीं पायदान पर शेष यात्रा करते हुए एक यूरोपियन यात्री के अन्दर आने पर चालक की मार भी झेलनी पड़ी। उन्होंने अपनी इस यात्रा में अन्य भी कई कठिनाइयों का सामना किया। अफ्रीका में कई होटलों को उनके लिए वर्जित कर दिया गया। इसी तरह ही बहुत सी घटनाओं में से एक यह भी थी जिसमें अदालत के न्यायाधीश ने उन्हें अपनी पगड़ी उतारने का आदेश दिया था जिसे उन्होंने नहीं माना। ये सारी घटनाएँ गान्धी के जीवन में एक मोड़ बन गई और विद्यमान सामाजिक अन्याय के प्रति जागरुकता का कारण बनीं तथा सामाजिक सक्रियता की व्याख्या करने में मददगार सिद्ध हुई। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर हो रहे अन्याय को देखते हुए गान्धी ने अंग्रेजी साम्राज्य के अन्तर्गत अपने देशवासियों के सम्मान तथा देश में स्वयं अपनी स्थिति के लिए प्रश्न उठाये।

1906 के ज़ुलु युद्ध में भूमिका

1906 में, दक्षिण अफ्रीका में नए चुनाव कर के लागू करने के बाद दो अंग्रेज अधिकारियों को मार डाला गया। बदले में अंग्रेजों ने जूलू के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। गांधी जी ने भारतीयों को भर्ती करने के लिए ब्रिटिश अधिकारियों को सक्रिय रूप से प्रेरित किया। उनका तर्क था अपनी नागरिकता के दावों को कानूनी जामा पहनाने के लिए भारतीयों को युद्ध प्रयासों में सहयोग देना चाहिए। तथापि, अंग्रेजों ने अपनी सेना में भारतीयों को पद देने से इंकार कर दिया था। इसके बावजूद उन्होंने गांधी जी के इस प्रस्ताव को मान लिया कि भारतीय घायल अंग्रेज सैनिकों को उपचार के लिए स्टेचर पर लाने के लिए स्वैच्छा पूर्वक कार्य कर सकते है। इस कोर की बागडोर गांधी ने थामी। 21 जुलाई 1906 को गांधी जी ने इंडियन ओपिनियन में लिखा कि 23 भारतीय निवासियों के विरूद्ध चलाए गए अप्रेशन के संबंध में प्रयोग द्वारा नेटाल सरकार के कहने पर एक कोर का गठन किया गया है। दक्षिण अफ्रीका में भारतीय लोगों से इंडियन ओपिनियन में अपने कॉलमों के मध्यम से इस युद्ध में शामिल होने के लिए आग्रह किया और कहा, यदि सरकार केवल यही महसूस करती है कि आरक्षित बल बेकार हो रहे है तब वे इसका उपयोग करेंगे और असली लड़ाई के लिए भारतीयों का प्रशिक्षण देकर इसका अवसर देंगे।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए संघर्ष

1915 में, गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत में रहने के लिए लौट आए उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों पर अपने विचार व्यक्त किए, लेकिन वे भारत के मुख्य मुद्दों, राजनीति तथा उस समय के कांग्रेस दल के प्रमुख भारतीय नेता गोपाल कृष्ण गोखले जो एक सम्मानित नेता थे पर ही आधारित थे।

चंपारण और खेड़ा – गांधी की पहली बड़ी उपलब्धि 1918 में चम्पारन और खेड़ा सत्याग्रह, आंदोलन में मिली हालांकि अपने निर्वाह के लिए जरूरी खाद्य फसलों की बजाए नकद पैसा देने वाली खाद्य फसलों की खेती वाले आंदोलन भी महत्वपूर्ण रहे। जमींदारों (अधिकांश अंग्रेज) की ताकत से दमन हुए भारतीयों को नाममात्र भरपाई भत्ता दिया गया जिससे वे अत्यधिक गरीबी से घिर गए। गांवों को बुरी तरह गंदा और अस्वास्थ्यकर और शराब, अस्पृश्यता और पर्दा से बांध दिया गया। अब एक विनाशकारी अकाल के कारण शाही कोष की भरपाई के लिए अंग्रेजों ने दमनकारी कर लगा दिए जिनका बोझ दिन प्रतिदिन बढ़ता ही गया। यह स्थिति निराशाजनक थी। खेड़ा, गुजरात में भी यही समस्या थी। गांधी जी ने वहां एक आश्रम बनाया जहाँ उनके बहुत सारे समर्थकों और नए स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं को संगठित किया गया। उन्होंने गांवों का एक विस्तृत अध्ययन और सर्वेक्षण किया जिसमें प्राणियों पर हुए अत्याचार के भयानक कांडों का लेखाजोखा रखा गया और इसमें लोगों की अनुत्पादकीय सामान्य अवस्था को भी शामिल किया गया था। ग्रामीणों में विश्वास पैदा करते हुए उन्होंने अपना कार्य गांवों की सफाई करने से आरंभ किया जिसके अंतर्गत स्कूल और अस्पताल बनाए गए और उपरोक्त वर्णित बहुत सी सामाजिक बुराईयों को समाप्त करने के लिए ग्रामीण नेतृत्व प्रेरित किया।

असहयोग आन्दोलन – गांधी जी ने असहयोग, अहिंसा तथा शांतिपूर्ण प्रतिकार को अंग्रेजों के खिलाफ शस्त्र के रूप में उपयोग किया। पंजाब में अंग्रेजी फोजों द्वारा भारतीयों पर जलियांवाला नरसंहार जिसे अमृतसर नरसंहार के नाम से भी जाना जाता है ने देश को भारी आघात पहुंचाया जिससे जनता में क्रोध और हिंसा की ज्वाला भड़क उठी। गांधीजी ने ब्रिटिश राज तथा भारतीयों द्वारा प्रतिकारात्मक रवैया दोनों की की। उन्होंने ब्रिटिश नागरिकों तथा दंगों के शिकार लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त की तथा पार्टी के आरंभिक विरोध के बाद दंगों की भर्त्सना की। गांधी जी के भावनात्मक भाषण के बाद अपने सिद्धांत की वकालत की कि सभी हिंसा और बुराई को न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता है। किंतु ऐसा इस नरसंहार और उसके बाद हुई हिंसा से गांधी जी ने अपना मन संपूर्ण सरकार आर भारतीय सरकार के कब्जे वाली संस्थाओं पर संपूर्ण नियंत्रण लाने पर केंद्रित था जो जल्दी ही स्वराज अथवा संपूर्ण व्यक्तिगत, आध्यात्मिक एवं राजनैतिक आजादी में बदलने वाला था।

स्वराज और नमक सत्याग्रह – गांधी जी सक्रिय राजनीति से दूर ही रहे और 1920 की अधिकांश अवधि तक वे स्वराज पार्टी और इंडियन नेशनल कांग्रेस के बीच खाई को भरने में लगे रहे और इसके अतिरिक्त वे अस्पृश्यता, शराब, अज्ञानता और गरीबी के खिलाफ आंदोलन छेड़ते भी रहे। उन्होंने पहले 1928 में लौटे एक साल पहले अंग्रेजी सरकार ने सर जॉन साइमन के नेतृत्व में एक नया संवेधानिक सुधार आयोग बनाया जिसमें एक भी सदस्य भारतीय नहीं था। इसका परिणाम भारतीय राजनैतिक दलों द्वारा बहिष्कार निकला। दिसंबर 1928 में गांधी जी ने कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के एक अधिवेशन में एक प्रस्ताव रखा जिसमें भारतीय साम्राज्य को सत्ता प्रदान करने के लिए कहा

गया था अथवा ऐसा न करने के बदले अपने उद्देश्य के रूप में संपूर्ण देश की आजादी के लिए असहयोग आंदोलन का सामना करने के लिए तैयार रहें। गांधी जी ने न केवल युवा वर्ग सुभाष चंद्र बोस तथा जवाहरलाल नेहरू जैसे पुरुषों द्वारा तत्काल आजादी की मांग के विचारों को फलीभूत किया बल्कि अपनी स्वयं की मांग को दो साल की बजाए एक साल के लिए रोक दिया। अंग्रेजों ने कोई जवाब नहीं दिया। नहीं 31 दिसंबर 1929, भारत का झंडा फहराया गया था लाहौर में है, 26 जनवरी 1930 का दिन लाहौर में भारतीय स्वतंत्रता दिवस के रूप में इंडियन नेशनल कांग्रेस ने मनाया। यह दिन लगभग प्रत्येक भारतीय संगठनों द्वारा भी मनाया गया। इसके बाद गांधी जी ने मार्च 1930 में नमक पर कर लगाए जाने के विरोध में नया सत्याग्रह चलाया जिसे 12 मार्च से 6 अप्रैल तक नमक आंदोलन के याद में 400 किलोमीटर (248 मील) तक का सफर अहमदाबाद से दांडी, गुजरात तक चलाया गया ताकि स्वयं नमक उत्पन्न किया जा सके। समुद्र की ओर इस यात्रा में हजारों की संख्या में भारतीयों ने भाग लिया। भारत में अंग्रेजों की पकड़ को विचलित करने वाला यह एक सर्वाधिक सफल आंदोलन था जिसमें अंग्रेजों ने 80,000 से अधिक लोगों को जेल भेजा।

द्वितीय विश्व युद्ध और भारत छोड़ो – द्वितीय विश्व युद्ध 1939 में जब छिड़ने नाजी जर्मनी आक्रमण पोलैंड. आरंभ में गांधी जी ने अंग्रेजों के प्रयासों को अहिंसात्मक नैतिक सहयोग देने का पक्ष लिया किंतु दूसरे कांग्रेस के नेताओं ने युद्ध में जनता के प्रतिनिधियों के परामर्श लिए बिना इसमें एकतरफा शामिल किए जाने का विरोध किया। कांग्रेस के सभी चयनित सदस्यों ने सामूहिक तौर पर अपने पद से इस्तीफा दे दिया। लंबी चर्चा के बाद, गांधी ने घोषणा की कि जब स्वयं भारत को आजादी से इंकार किया गया हो तब लोकतांत्रिक आजादी के लिए बाहर से लड़ने पर भारत किसी भी युद्ध के लिए पार्टी नहीं बनेगी। जैसे जैसे युद्ध बढ़ता गया गांधी जी ने आजादी के लिए अपनी मांग को अंग्रेजों को भारत छोड़ो आन्दोलन नामक विधेयक देकर तीव्र कर दिया। यह गांधी तथा कांग्रेस पार्टी का सर्वाधिक स्पष्ट विद्रोह था जो भारतीय सीमा से अंग्रेजों को खदेड़ने पर लक्षित था। गांधी जी के दूसरे नंबर पर बैठे जवाहरलाल नेहरू की पार्टी के कुछ सदस्यों तथा कुछ अन्य राजनैतिक भारतीय दलों ने आलोचना की जो अंग्रेजों के पक्ष तथा विपक्ष दोनों में ही विश्वास रखते थे। कुछ का मानना था कि अपने जीवन काल में अथवा मौत के संघर्ष में अंग्रेजों का विरोध करना एक नश्वर कार्य है जबकि कुछ मानते थे कि गांधी जी पर्याप्त कोशिश नहीं कर रहे हैं। भारत छोड़ो इस संघर्ष का सर्वाधिक शक्तिशाली आंदोलन बन गया जिसमें व्यापक हिंसा और गिरफ्तारी हुई। पुलिस की गोलियों से हजारों की संख्या में स्वतंत्रता सेनानी या तो मारे गए या घायल हो गए और हजारों गिरफ्तार कर लिए गए। गांधी और उनके समर्थकों ने स्पष्ट कर दिया कि वह युद्ध के प्रयासों का समर्थन तब तक नहीं देंगे तब तक भारत को तत्काल आजादी न दे दी जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस बार भी यह आन्दोलन बन्द नहीं होगा यदि हिंसा के व्यक्तिगत कृत्यों को मूर्त रूप दिया जाता है। उन्होंने कहा कि उनके चारों ओर अराजकता का आदेश असली अराजकता से भी बुरा है। उन्होंने सभी कांग्रेसियों और भारतीयों को अहिंसा के साथ करो या मरो (अंग्रेजी में डू ऑर डाय) के द्वारा अन्तिम स्वतन्त्रता के लिए अनुशासन बनाए रखने को कहा।

स्वतंत्रता और भारत का विभाजन

गांधी जी ने 1946 में कांग्रेस को ब्रिटिश कैबीनेट मिशन के प्रस्ताव को ठुकराने का परामर्श दिया क्योंकि उसे मुस्लिम बहुलता वाले प्रांतों के लिए प्रस्तावित समूहीकरण के प्रति उनका गहन संदेह होना था इसलिए गांधी जी ने प्रकरण को एक विभाजन के पूर्वाभ्यास के रूप में देखा। हालांकि कुछ समय से गांधी जी के साथ कांग्रेस द्वारा मतभेदों वाली घटना में से यह भी एक घटना बनी। चूंकि नेहरू और पटेल जानते थे कि यदि कांग्रेस इस योजना का अनुमोदन नहीं करती है तब सरकार का नियंत्रण मुस्लिम लीग के पास चला जाएगा। 1948 के बीच लगभग 5000 से भी अधिक लोगों को हिंसा के दौरान मौत के घाट उतार दिया गया। गांधी जी किसी भी ऐसी योजना के खिलाफ थे जो भारत को दो अलग अलग देशों में विभाजित कर दे भारत में रहने वाले बहुत से हिंदुओं और सिक्खों एवं मुस्लिमों का भारी बहुमत देश के बंटवारे के पक्ष में था। इसके अतिरिक्त मुहम्मद अली जिन्ना, मुस्लिम लीग के नेता ने, पश्चिम पंजाब, सिंध, उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत और ईस्ट बंगाल में व्यापक सहयोग का परिचय दिया। व्यापक स्तर पर फैलने वाले हिंदू मुस्लिम लड़ाई को रोकने के लिए ही कांग्रेस नेताओं ने बंटवारे की इस योजना को अपनी मंजूरी दे दी थी। कांग्रेस नेता जानते थे कि गांधी जी बंटवारे का विरोध करेंगे और उसकी सहमति के बिना कांग्रेस के लिए आगे बढ़ना असंभव था चूंकि पार्टी में गांधी जी का सहयोग और संपूर्ण भारत में उनकी स्थिति मजबूत थी। गांधी जी के करीबी सहयोगियों ने बंटवारे को एक सर्वोत्तम उपाय के रूप में स्वीकार किया और सरदार पटेल ने गांधी जी को समझाने का प्रयास किया कि नागरिक अशांति वाले युद्ध को रोकने का यही एक उपाय है। मजबूर गांधी ने अपनी अनुमति दे दी।

हत्या

30 जनवरी 1948 गांधी की उस समय गोली मारकर हत्या कर दी गई जब वे नई दिल्ली के बिड़ला भवन के मैदान में रात चहलकदमी कर रहे थे। गांधी का हत्यारा नाथूराम गौडसे हिन्दू राष्ट्रवादी थे जिनके कट्टरपंथी हिंदु महासभा के साथ संबंध थे जिसने गांधी जी को पाकिस्तान को भुगतान करने के मुद्दे को लेकर भारत को कमजोर बनाने के लिए जिम्मेदार ठहराया था। गोडसे और उसके उनके सह षड्यंत्रकारी नारायण आप्टे को बाद में केस चलाकर सजा दी गई तथा 15 नवंबर 1949 को इन्हें फांसी दे दी गई।

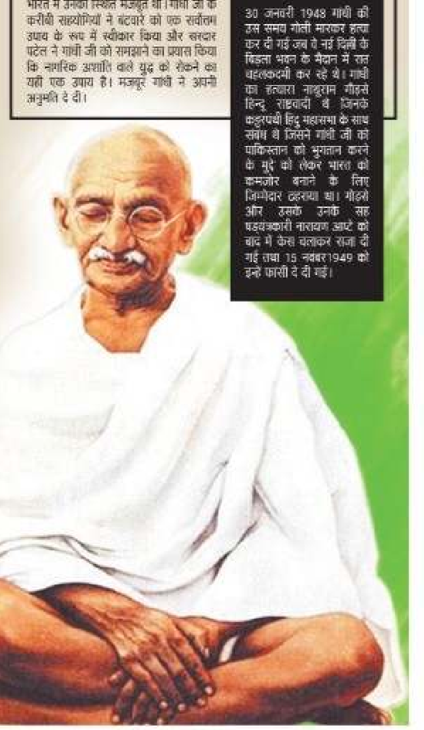

गांधी जयंती आत्ममूल्यांकन का दिन

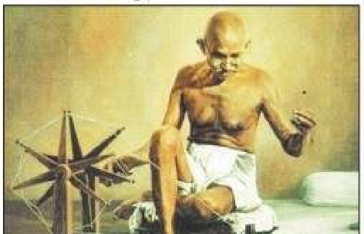

आज गांधी जयंती है। गांधी प्रतिमाओं और उनकी तस्वीरों को पिछली पुण्यतिथि के बाद धोने-पोंछने का यह पहला अवसर आया है। प्रत्येक वर्ष ऐसा ही होता है, जयंती और पुण्यतिथि के बीच की अवधि में गांधीजी के साथ कोई नहीं होता है। कड़वी बात तो यह है कि बचे-खुचे गांधीवादी भी नहीं। वे गांधीजी का साथ दे भी नहीं सकते है क्योंकि जरूरतों और परिस्थितियों ने उन्हें भी सिखा दिया है कि गांधी बनने से केवल प्रताड़ना मिल सकती है, संपदा, संपत्ति नहीं। वैचारिक धरातल में यह खोखलापन एक दिन या एक माह या एक वर्ष में नहीं आ गया। जान-बूझकर धीरे-धीरे और योजनाबद्ध ढंग से गांधी सिद्धांतों को मिटाया जा रहा है क्योंकि यह मौजूदा स्वार्थों में सबसे बड़े बाधक हैं। गांधी सिद्धांतों को मिटाने की इस गतिविधि को देखा नहीं गया, ऐसा नहीं है। सब चुप हैं क्योंकि अपना-अपना लाभ सभी को चुप रहने के लिए प्रेरित कर रहा है। आमतौर पर जन्मदिन या जयंती के दिन आस्था के फूल अर्पित करने की परंपरा है। इस दिन कड़वी बातों को कहने का रिवाज नहीं है। यदि इस रिवाज को तोड़ा जा रहा है, तो मजबूरी के दबाव को समझे जाने की अवश्यकता है। यह राष्ट्र नेताओं को महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर कीचड़ उछालने की अनुमति कैसे दे रहा है, क्यों दे रहा है? यह कैसी सहिष्णुता है जो राष्ट्र की बुनियादी विचारधारा को मटियामेट करने पर आमादा है?

कहते हैं कि जो राष्ट्र अपने चरित्र की रक्षा करने में सक्षम नहीं है, उसकी रक्षा कोई नहीं कर सकता है। क्या परमाणु बम भारतीयता की रक्षा कर पाएगा? दरअसल, यह भुला दिया गया है कि पहले विश्वास बनता है, फिर श्रद्धा कायम होती है। किसी ने अपनी जय-जयकार करवाने के लिए क्रम उलट दिया और उल्टी परंपरा बन गई। अब विश्वास हो या नहीं हो, श्रद्धा का प्रदर्शन जोर-शोर से किया जाता है। गांधीजी भी श्रद्धा के इसी प्रदर्शन के शिकार हुए हैं। उनके सिद्धांतों में किसी को विश्वास रहा है या नहीं, इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता। जयंती और पुण्यतिथि पर उनकी कसमें खाकर वाहवाही जरूर लूटी जा रही है। गांधीजी के विचार बेचने की एक वस्तु बनकर रह गए है। वे छपे शब्दों से अधिक कुछ नहीं है। इसलिए ही गांधीजी की जरूरत आज पहले से कहीं अधिक है। इस जरूरत को पूरा करने की सामर्थ्य वाला व्यक्तित्व दूर-दूर तक नजर नहीं आ रहा है। हर कोई चाहता है कि आदर्श और मूल्य इतिहास में बने रहें और इतिहास को वह पूजता भी रहेगा। परंतु अपने वर्तमान को वह इस इतिहास से बचाकर रखना चाहता है। अपने लालच की रक्षा में वह गांधी की रोज हत्या कर रहा है, पल-पल उन्हें मार रहा है और राष्ट्र भीड़ की तरह तमाशबीन बनकर चुपचाप उसे देख रहा है। शायद कल उनमें से किसी को यही करना पड़े! अपने हितों की विरोधी चीजों को इतिहास में बदल देने में भारतीयता आजादी के बाद माहिर हो चुकी है। वर्तमान और इतिहास की इस लड़ाई में वर्तमान ही जीतता आ रहा है क्योंकि इतिहास की तरफ से लड़ने वाले शेष नहीं हैं। आज गांधी जयंती है। गांधीजी की प्रतिमा के सामने आंख मूंदकर कुछ क्षण खड़े रहने वाले क्या यह पश्चाताप कर रहे होंगे कि वे गांधीजी के बताए रास्तों पर क्यों नहीं चल रहे हैं? नहीं, वे यह कतई नहीं सोच रहे होंगे। तब वे मन ही मन क्या कह रहे होंगे? सोचिए और उस पर मनन कीजिए। गांधी जयंती पर यही बड़ा काम होगा।

गांधीजी ने बजाया था सत्याग्रह का बिगुल

दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद भारतवासियों को उनके अधिकार दिलाने के लिए गांधी जी नेशनल इण्डियन कांग्रेस की स्थापना की। पहली बार सत्याग्रह के शस्त्र का प्रयोग किया और विजय भी पाई। इस प्रकार सन? 1914-15 में गांधी जब दक्षिण अफ्रीका से वापिस भारत लौटे, तब तक इन विचारों और जीवन-व्यवहारों में आमूल-चूल परिवर्तन आ चुका था।

भारत लौटकर कुछ दिन गांधी जी देश का भ्रमण कर वास्तविक स्थिति का जायजा लेते रहे। फिर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसी संस्था को पूर्ण स्वतंत्रता का लक्ष्य देकर संघर्ष में कूद पड़े। क्योंकि प्रथम विश्वयुद्ध में वचन देकर भी अंग्रेज सरकार ने भारतीयों के प्रति अपने रवैये में कोई परिवर्तन नहीं किया था, इससे गांधी जी और भी चिढ़ गए और अंग्रेजी कानूनों का बहिष्कार और सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया। भारतवासियों के मानवाधिकारों का हनन करने वाले रोलट एक्ट का स्थान-स्थान पर विरोध-बहिष्कार होने लगा। सन 1919 में जलियां-वाला बाग में हो रही विरोध-सभा पर हुए अत्याचार ने गांधी जी की अंतरात्मा को हिलाकर रख दिया। सो अब वे समूचे स्वतंत्रता आंदोलन की बागडोर सम्हाल खुलम-खुल्ला संघर्ष में कूद पड़े। इनका संकेत पाते ही सारे देश में विरोधी आंदोलनों की एक आंधी सी छा गई। अंग्रेज सरकार की लाठी-गोलियां भी अंधाधुंध बरसने लगी। जेलें सत्याग्रहियों से भर उठीं। गांधीजी को भी जेल में डाल दिया गया। बिहार की नील सत्याग्रह, डाण्डी यात्रा या नमक सत्याग्रह, खेड़ा का किसान सत्याग्रह आदि गांधी जी के जीवन के प्रमुख सत्याग्रह हैं। इन्हें कई बार महीने-महीने भर का उपवास भी करना पड़ा। अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए इन्होंने नवजीवन और यंग इण्डिया जैसे पत्र भी प्रकाशित किए। विदेशी-बहिष्कार और विदेशी माल का दाह, मद्य निषेध के लिए धरने का आयोजन, अछूतोद्धार, स्वदेशी प्रचार के लिए चर्खे और खादी को महत्व देना, सर्वधर्म-समन्वय और विशेषकर हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए प्रचार इनके द्वारा आरंभ किए गए अन्य प्रमुख सामाजिक सुधारात्मक कार्य माने गए हैं। इस प्रकार के स्वतंत्रता दिलाने वाले प्रयासों के लिए अक्सर बीच-बीच में इन्हें जेलयात्रा भी करनी पड़ती। सन 1931 में इग्लैंड में संपन्न गोलमेज कान्फ्रेंस में भाग लेने के लिए गांधी जी वहां गए, पर जब इनकी इच्छा के विरुद्ध हरिजनों को निर्वाचन का विशेषाधिकार हिन्दुओं से अलग करके दे दिया, तो भारत लौटकर गांधी जी ने पुन: आंदोलन आरंभ कर दिया। बंदी बनाए जाने पर जब ये अनशन करने लगे, तो सारा देश क्षुब्ध हो उठा। फलत: ब्रिटिश सरकार को गांधी जी के मतानुसार हरिजनों का पृथक निर्वाचनाधिकार का हठ छोड़ना पड़ा।

ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो मार्ट में भारत के रंगों के साथ दिखी युवा ऊर्जा, राम की कथा ने बांधा सांस्कृतिक रंग

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा स्थित इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट में आयोजित वर्ष 2026 के उत्तर प्रदेश अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले में उत्तर प्रदेश की औद्योगिक प्रगति, उद्यमिता, निर्यात, नवाचार और सांस्कृतिक विविधता का व्यापक प्रदर्शन देखने को मिला। 25 से 29 सितंबर तक आयोजित इस मेले में उद्योग और व्यापार से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने भी लोगों का ध्यान आकर्षित किया। मेले का मुख्य केंद्र युवाओं के लिए आयोजित संवाद कार्यक्रम रहा। नृत्य, संगीत और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने युवाओं में खासा उत्साह पैदा किया। मेले के अंतिम सत्र तक युवा मंच के आसपास जुटे रहे और प्रस्तुतियों का आनंद लेते हुए बड़ी संख्या में सेल्फी लेते दिखाई दिए। युवाओं की यह सक्रिय भागीदारी मेले के सांस्कृतिक पक्ष को विशेष रूप से जीवंत बनाती रही। मेले की विशेषता केवल व्यापारिक प्रदर्शन तक सीमित नहीं रही। यहां उद्योग, उद्यमिता और नई तकनीक के साथ युवाओं को जोड़ने वाली गतिविधियों को भी स्थान मिला। विद्यार्थियों के लिए आयोजित विकसित भारत 2047 मॉडल संयुक्त राष्ट्र कार्यक्रम में 14 विद्यालयों के 100 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थियों ने वैश्विक व्यापार, वैश्विक अर्थव्यवस्था, तकनीक और वह्नशील आपूर्ति श्रृंखला जैसे विषयों पर चर्चा की। उत्तर प्रदेश अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले का उद्देश्य राज्य के उद्योगों, उद्यमियों, निर्यातकों, छोटे एवं मध्यम उद्यमों और व्यापार जगत को राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय बाजार से जोड़ना भी रहा। आधिकारिक जानकारी के अनुसार यह आयोजन उद्योगों, नए उद्यमों, निर्यातकों और व्यापार जगत के लिए अपने उत्पाद प्रदर्शित करने, साझेदारी बनाने और नए बाजार तलाशने का मंच रहा। इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट स्वयं विभिन्न क्षेत्रों की प्रदर्शनियों और सम्मेलनों के लिए प्रमुख केंद्र है। यहां विनिर्माण, वस्त्र, ऑटोमोबाइल, खाद्य एवं पेय, नवीकरणीय ऊर्जा, स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकी, वाहन, शिक्षा, निर्माण और उपभोक्ता वस्तुओं सहित अनेक क्षेत्रों से जुड़े आयोजन होते हैं। इसी व्यापक औद्योगिक और व्यावसायिक वातावरण के बीच हस्तकला और इतिहास की भव्य नृत्य-नाट्य प्रस्तुति ने मेले को सांस्कृतिक रंग प्रदान किया। भारत की विविधता, संस्कृति और परंपराओं को नृत्य, संगीत और रंगों के माध्यम से प्रस्तुत करने वाली इस प्रस्तुति की प्रेरणा भारत की उस शाश्वत कथा से जुड़ी है, जो सदियों से भारतीय जीवन और संस्कृति का हिस्सा रही है—श्रीराम की कथा। राम की यात्रा केवल अयोध्या से लंका तक की यात्रा नहीं, बल्कि भारत की धरती, उसकी प्रकृति, लोकजीवन और विभिन्न संस्कृतियों से होकर गुजरने वाली यात्रा के रूप में प्रस्तुत की गई। इसी यात्रा के माध्यम से भारत के अलग-अलग रंगों को मंच पर सामने लाया गया—साहस, भक्ति, करुणा, शक्ति, शांति और उत्सव के रंग। विभिन्न नृत्य शैलियों, संगीत और दृश्यात्मकता के संगम से सजी इस प्रस्तुति ने यह संदेश दिया कि भारत अनेक रंगों से बना है, लेकिन इन सभी रंगों की आत्मा एक है। इस भव्य प्रस्तुति की रचनात्मक दिशा में श्री राम संस्कृता, ओडिसी नृत्य प्रशिक्षण के निदेशक, नृत्य निर्देशक, कलाकार एवं महोत्सव संयोजक के रूप में सक्रिय रहे। उन्होंने गुरु श्री संतोष नायर के मार्गदर्शन में मयूरभंज छऊ और समकालीन नृत्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। श्री राम संस्कृता ने भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है। उन्होंने जी-20 शिखर सम्मेलन, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद, ब्रिटिश काउंसिल तथा भारत मंडपम के उद्घाटन जैसे प्रतिष्ठित मंचों पर नृत्य निर्देशन एवं प्रस्तुतियों में योगदान दिया है। वे वर्ष 2026 के 77वें गणतंत्र दिवस समारोह और वर्ष 2025 में केवड़िया में आयोजित एकता दिवस समारोह में सहायक नृत्य निर्देशक के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। विभिन्न राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंचों पर उनकी रचनात्मक प्रस्तुतियां लगातार भारतीय नृत्य और संस्कृति को नई दिशा देने का कार्य कर रही हैं।

गुरुग्राम आपूर्ति विभाग के चार अफसरों के खिलाफ राशन घोटाले में केस दर्ज

एजेंसी

गुरुग्राम। जिला खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग में राशन का बड़ा घोटाला उजागर हुआ है। सीएम फ्लाइंग टीम की जांच के बाद शहर के थाना शिवाजी नगर पुलिस ने विभाग के चार अधिकारियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। शिकायत के अनुसार विभागीय रिकॉर्ड की जांच में जुलाई, अगस्त और नवंबर 2023 के दौरान कुल 1,53,104 किलो गेहूं ऐसी पीओएस मशीनों में ट्रांसफर किया गया, जो किसी भी राशन डिपो को आवंटित ही नहीं थीं। सत्यापन में पाया गया कि संबंधित मशीनें भौतिक रूप से मौजूद ही नहीं थीं और 2020 के बाद सरकार की ओर से उनमें राशन का आवंटन भी नहीं किया गया था। रिकॉर्ड के मुताबिक जुलाई 2023 में 71,735 किलो, अगस्त में 57,969 किलो और नवंबर में 23,400 किलो गेहूं का फर्जी ट्रांसफर किया गया। आरोप है कि अधिकारियों ने डिपो होल्डरों से मिलीभगत कर फर्जी दस्तावेजों के आधार पर यह हेराफेरी की। जांच में उप-निरीक्षक राकेश कुमार पर डिपो होल्डर बाबूराम गुप्ता से मशीन अटैच करने के नाम पर अवैध वसूली का आरोप भी लगा है। रिपोर्ट के अनुसार एक जनवरी 2022 से 31 मार्च 2026 के बीच बाबूराम गुप्ता और उनकी पत्नी सीमा गुप्ता के बैंक खातों से राकेश कुमार के खाते में कुल 1,29,200 रुपये ट्रांसफर किए गए। शिकायतकर्ता ने पुलिस से 2022 से 2026 तक के सभी ट्रांसफर रिकॉर्ड को कब्जे में लेकर गहन जांच की मांग की है। साथ ही कहा है कि जांच में जो भी अन्य अधिकारी या व्यक्ति शामिल पाया जाए,

नहीं हटेगा गुरुग्राम-फरीदाबाद रोड टोल, नोटिफिकेशन जारी -सरकार ने अनिश्चितकाल के लिए बढ़ाया

एजेंसी

गुरुग्राम। गुरुग्राम-फरीदाबाद को जोड़ने वाली सड़कों पर लगने वाले चार टोल टैक्स अभी नहीं हटेंगे। सरकार ने इन टोल को अनिश्चितकाल तक जारी रखने का फैसला करते हुए नया नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। पहले इन चारों टोल को बंद करने की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2026 तय की गई थी। अब नए नोटिफिकेशन के अनुसार टोल पर फीस वसूली लगातार जारी रहेगी। नोटिफिकेशन के मुताबिक, इन टोल पर निजी कार, स्टेशन वैगन और हल्के वाहन चालकों से 40 रुपये का एकतरफा शुल्क लिया जाएगा। वहीं कमर्शियल, लॉजिस्टिक वाहनों और भारी मशीनरी से प्रति ट्रिप 350 रुपये तक का शुल्क वसूला जाएगा। बार-बार सफर करने वाले यात्रियों के लिए सरकार ने दैनिक और

मासिक पास की सुविधा भी दी है। एक ही दिन में कई बार टोल क्रॉस करने वाले चालक एक दिन के शुल्क का 1.5 गुना देकर पूरे दिन आवाजाही कर सकेंगे, जो आधी रात से मान्य होगा। कमर्शियल वाहनों के लिए मासिक पास एकल यात्रा शुल्क का 30 गुना होगा, जबकि गैर-व्यावसायिक निजी वाहनों के लिए मासिक पास की दर एकल यात्रा शुल्क का 20 गुना तय की गई है। लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार गुरुग्राम-फरीदाबाद राजमार्ग क्रेशर जोन रोड और बल्लभगढ़-सोहना खंड पर लगने वाले टोल प्लाजा पर फीस वसूली पहले की तरह जारी रहेगी। स्थानीय निवासियों और किसानों को राहत देते हुए अधिसूचना में कई श्रेणियों को टोल से छूट दी गई है। दोपहिया वाहन, कृषि ट्रैक्टर-ट्रॉली, पुलिस वाहन, अग्निशमन गाड़ियां, एंबुलेंस और गैर-व्यावसायिक स्थानीय आवागमन करने वाले लोगों से कोई टोल नहीं लिया जाएगा। बता दें कि कि गुरुग्राम-फरीदाबाद रोड पर टोल को लेकर लंबे समय से विरोध होता रहा है। स्थानीय लोगों और कई जनप्रतिनिधियों ने कई बार टोल हटाने की मांग की थी, जिसके बाद सरकार ने 31 जुलाई 2026 तक टोल का समय तय किया था। अब नए नोटिफिकेशन के बाद टोल हटने की उम्मीद खत्म हो गई है। इससे रोजाना गुरुग्राम से फरीदाबाद जाने वाले हजारों यात्रियों पर सीधा असर पड़ेगा।

निमार्णाधीन इमारत से गिरकर श्रमिक की मौत मामले में 7 के खिलाफ प्राथमिकी

एजेंसी

नोएडा। बिसिरख क्षेत्र स्थित एक निमार्णाधीन इमारत में काम के दौरान दूसरी मंजिल से गिरकर एक श्रमिक की मौत के मामले में प्राथमिकी दर्ज की गई है। मृतक के भाई की तहरीर पर बिसरख कोतवाली पुलिस ने सोमवार को चार बिल्डरों और तीन ठेकेदारों समेत सात लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। बुलंदशहर निवासी पंकज गाजियाबाद के मसूरी थाना क्षेत्र में इटावली स्थित अंबेडकर कॉलोनी में रहते थे। वह बिसरख के बिसिरख बुजुर्ग में बिहारी मार्केट के पास टीन वैली-2 बिल्डर्स बिल्ड में काम करते थे। पंकज के भाई बंटी ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि बिल्डर दिनेश शर्मा, सुरेश चौहान, लोकेश चंदेल और मोहन चौहान और ठेकेदार प्रिंस, पारस और बिजेंद्र ने पंकज को काम के लिए बुलाया था। 27 सितंबर (रविवार) को शाम करीब चार बजे काम करते समय पंकज दूसरी मंजिल से नीचे गिर गए। गंभीर चोटें लगने के कारण उनकी मौत हो गई हादसे के बाद पंकज को तत्काल यशोदा अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। शव का पोस्टमार्टम गाजियाबाद के मोर्चरी में कराया गया। बंटी ने आरोप लगाया है कि नामजद लोगों ने काम कर रहे मजदूर की सुरक्षा का ध्यान नहीं रखा। उनके अनुसार इसी लापरवाही के कारण उनके भाई की जान गई। उन्होंने पुलिस से आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कानूनी कार्रवाई करने की मांग की। वहीं कोतवाली प्रभारी रंजीत सिंह का कहना है कि फिलहाल आरोप तहरीर पर आधारित है और पुलिस जांच के बाद ही स्थिति स्पष्ट होगी।

तेज रफ्तार कार की टक्कर से सब्जी विक्रेता की मौत

एजेंसी

नोएडा। सेक्टर-39 थानाक्षेत्र में सोमवार देर रात तेज रफ्तार स्कॉर्पियो ने रेहड़ी लेकर घर जा रहे सब्जी विक्रेता को टक्कर मार दी। हादसे में वह गंभीर रूप से घायल हो गया। आसपास के लोगों ने घायल को जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। संभल के बहजोई निवासी सोमवीर ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उनका 32 वर्षीय भाई मंगल सिंह बरौला में परिवार के साथ रहता था। वह रेहड़ी पर सब्जी बेचता था। सोमवार रात सब्जी बेचने के बाद वह घर लौट रहा था। इसी दौरान आम्रपाली मॉल के पास पीछे से आई तेज रफ्तार कार ने उनकी रेहड़ी में टक्कर मार दी। टक्कर

लगने से मंगल सिंह सड़क पर दूर जा गिरे और गंभीर रूप से घायल हो गए। उनकी रेहड़ी भी पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई। हादसे के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। लोगों ने घायल को अस्पताल पहुंचाया, लेकिन उनकी जान नहीं बच सकी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराया और परिजनों को सौंप दिया। इसके बाद मृतक का अंतिम संस्कार किया गया। पुलिस ने मृतक के भाई की शिकायत पर अज्ञात चालक के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है। वाहन के नंबर के आधार पर पुलिस आरोपी चालक तक पहुंचने का प्रयास कर रही है।

तीन सड़क हादसों में दो लोगों की मौत, एक गंभीर रूप से घायल

एजेंसी

गुरुग्राम। जिले में तेज रफ्तार और लापरवाही से वाहन चलाने का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है।पिछले कुछ दिनों के भीतर शहर के अलग-अलग थाना क्षेत्रों में हुए तीन भीषण सड़क हादसों में दो लोगों की जान चली गई, जबकि एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसों के बाद आरोपी चालक अपने वाहन छोड़कर या मौके से फरार होने में कामयाब रहे। पुलिस ने तीनों मामलों में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की संबंधित धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। कार ने मोटरसाइकिल को मारी टक्कर, एक की मौत उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले निवासी मोहम्मद नईम निवासी वर्तमान में मालवीय नगर दिल्ली में रहकर पीओपी का काम करते हैं। पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 26 सितंबर की रात वह अपने दोस्तों के साथ दो मोटरसाइकिलों पर मालवीय नगर लौट रहे थे। आगे वाली मोटरसाइकिल पर मोहम्मद इदरीश और आशिक अली बैठे थे, जबकि पीछे वाली बाइक पर मोहम्मद नईम और रंजीत यादव सवार थे। रात करीब दस बजे फरीदाबाद-गुरुग्राम रोड पर जैनमेक्ट रेड लाइट के पास पहुंचे, तो सिग्नल लाल होने पर उन्होंने गाड़ियां रोक लीं। तभी पीछे से आई एक तेज रफ्तार काले रंग की कार गाड़ी ने मोहम्मद इदरीश की मोटरसाइकिल को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि मोहम्मद इदरीश और आशिक अली उछलकर करीब 10 फीट दूर जा गिरे। घटना के तुरंत बाद कार चालक वाहन समेत मौके से फरार हो गया। घायलों को पास के के निजी अस्पताल ले जाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें गुरुग्राम के सरकारी अस्पताल और सफदरजंग अस्पताल (दिल्ली) भेजा गया। डॉक्टरों ने मोहम्मद इदरीश को मृत घोषित कर दिया, जबकि आशिक अली का इलाज जारी है। शिकायत के आधार पर पुलिस ने अज्ञात कार चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। अन्य सड़क हादसे सीतापुर (उत्तर प्रदेश) के ग्राम किशनापुर के निवासी राम जीवन ने पुलिस को बताया कि उनका छोटा भाई 27 वर्षीय अरुण गुरुग्राम के बसई गांव में किराए पर रहकर मजदूरी करता था। 26 सितंबर की सुबह करीब साढ़े छह बजे के बीच अरुण बसई फ्लाईओवर के नीचे भवानी एनक्लेव से बसई एनक्लेव की तरफ पैदल जा रहा था। इसी दौरान सामने से आ रहे एक तेज रफ्तार ट्रक के चालक ने लापरवाही से गाड़ी चलाते हुए अरुण को सीधी टक्कर मार दी। हादसे के बाद चालक ट्रक को मौके पर ही छोड़कर फरार हो गया। गंभीर रूप से घायल अरुण को राहगीरों और पुलिस की मदद से नागरिक अस्पताल सेक्टर-10 गुरुग्राम पहुंचाया गया, जहां से डॉक्टरों ने हालत नाजुक देखते हुए उन्हें रोहतक मेडिकल कॉलेज में रेफर कर दिया। रोहतक ले जाते समय रास्ते में ही अरुण ने दम तोड़ दिया। पुलिस ने मौके से ट्रक को कब्जे में लेकर अज्ञात चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। दुकान के बाहर सो रहे बेघर व्यक्ति पर चढ़ाई गाड़ी, पैर गंभीर रूप से उत्तरी कन्नौज (उत्तर प्रदेश) के निवासी 37 वर्षीय नीरज काम की तलाश में कुछ दिन पहले ही गुरुग्राम आए थे। 24 सितंबर को दिनभर सदर बाजार में काम ढूंढने के बाद रात होने पर रहने का कोई ठिकाना न होने के कारण वे थककर ट्रक मार्केट में एक दुकान के बाहर चबूतरे पर सो गए। देर रात करीब 12 बजे के एक अज्ञात वाहन चालक ने लापरवाही से गाड़ी चलाते हुए उनके पैरों पर गाड़ी चढ़ा दी, जिससे उनके दोनों पैरों में गंभीर चोटें आईं। सूचना मिलने पर पुलिस ने पीड़ित को तत्काल सेक्टर-10 सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां से गंभीर हालत को देखते हुए उन्हें रोहतक मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया। पुलिस जांच अधिकारी ने रोहतक अस्पताल पहुंचकर पीड़ित का बयान दर्ज किया। पीड़ित की शिकायत पर अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ बीएनएस की संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

संक्षिप्त डायरी

रास्ते में घेरकर कार सवार को पीटा

एजेंसी

नोएडा। सेक्टर-113 थानाक्षेत्र में रास्ते में घेरकर कार सवार को पीटने के मामले में दो नामजद और कई अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज हुआ है। जनता फ्लैट निवासी नवीन कुमार झा ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि बीते रविवार को रात दस बजे के करीब वह कार से अपने घर आ रहे थे। रास्ते में संदीप, उसकी पत्नी और राहुल समेत अन्य लोगों ने कार रोक ली। सभी ने गाली गलौज करते हुए मारपीट की। आरोपियों ने शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी दी। किसी तरह शिकायतकर्ता आरोपियों के चंगुल से निकला और उपचार के लिए जिला अस्पताल पहुंचा। हालत गंभीर होने के चलते उसे सफदरजंग अस्पताल के लिए रेफर किया गया। पुलिस ने संदीप, उसकी पत्नी, राहुल और तीनों के अज्ञात साथियों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस नामजद आरोपियों से पूछताछ कर आगे की कार्रवाई करने की बात कह रही है।

ई-रिक्शा से बैटरी चुराकर बेचने वाला गिरोह पकड़ा

एजेंसी

नोएडा। रेकी करने के बाद सुनसान जगहों पर खड़े ई-रिक्शा की बैटरी चुराने वाले गिरोह के दो बदमाशों को सेक्टर-113 थाने की पुलिस ने गिरफ्तार किया है। उनके कब्जे से चोरी की पांच बैटरी, घटना में इस्तेमाल ई-रिक्शा और दो चाकू बरामद किए गए हैं। थाना प्रभारी ने बताया कि सोमवार रात को पुलिस टीम सेक्टर-112 में गश्त कर रही थी। इसी दौरान एक संदिग्ध ई-रिक्शा दिखाई दिया। पुलिस ने रुकने का इशारा किया तो चालक और पीछे बैठा व्यक्ति भागने लगे। पुलिस ने पीछा कर दोनों को पकड़ लिया। तलाशी में दोनों के पास से एक-एक चाकू बरामद हुआ। पूछताछ में आरोपियों ने पुलिस को बताया कि वे नोएडा और आसपास के इलाकों में घूमकर सड़क किनारे खड़े ई-रिक्शा से बैटरी चोरी करते हैं। चोरी की बैटरी को कबाड़ियों को कम कीमत पर बेच देते हैं और उससे मिली रकम अपने शौक पूरे करने में खर्च करते हैं। आरोपियों की पहचान सोरखा निवासी 19 वर्षीय विक्की कुमार और हरदोई निवासी 22 वर्षीय सुमित के रूप में हुई है।आरोपियों ने हाल में भी नोएडा में ई-रिक्शा से बैटरी चोरी करने की बात स्वीकार की है। पुलिस ने दोनों के पास से जो चोरी की बैटरियां बरामद की हैं, उनमें से दो बैटरी को शहर के अलग-अलग हिस्सों से चुराया गया था। बरामद ई-रिक्शा के बारे में पता किया जा रहा है कि वह चोरी का है या नहीं। विक्की कुमार मूलरूप से बिहार के मधुबनी का रहने वाला है। दोनों नौकरी करने नोएडा आए थे। नौकरी नहीं मिली, तो दोनों चोरी की वारदात करने लगे। पूछताछ में आरोपियों ने अपने तीन अन्य साथियों के नाम भी पुलिस को बताए हैं। पुलिस तीनों की तलाश में संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही है।

शीशा लगाते समय पांचवीं मंजिल से गिरकर श्रमिक की मौत

एजेंसी

नोएडा। एक्सप्रेसवे थानाक्षेत्र के सेक्टर-129 स्थित निमार्णाधीन बिल्डिंग में शीशा लगाने के दौरान रविवार शाम श्रमिक का पैर फिसल गया। संतुलन बिगड़ने से वह पांचवीं मंजिल से नीचे गिर गया। गंभीर हालत में उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। एक्सप्रेसवे थाना प्रभारी ने बताया कि मृतक की पहचान 27 वर्षीय नारद कुमार के रूप में हुई है। वह मूलरूप से बिहार के बेगूसराय का रहने वाला था। वह सेक्टर-129 में अपने भाई के साथ रहकर निमार्णाधीन इमारत में शीशा लगाने का काम करता था। रविवार शाम करीब चार बजे वह पांचवीं मंजिल पर शीशा लगा रहा था। इसी दौरान पैर का संतुलन बिगड़ने से वह नीचे गिर गया। हादसे में नारद गंभीर रूप से घायल हो गया। उसके साथ काम कर रहे लोगों ने पुलिस और एंबुलेंस को सूचना दी। उसे तत्काल जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। सूचना मिलने पर एक्सप्रेसवे थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।पोस्टमार्टम के बाद परिजन शव को लेकर गृह जनपद चले गए। मृतक के परिजन की ओर से अभी कोई शिकायत नहीं दी गई है। पुलिस का कहना है कि शिकायत मिलने पर मामले में आगे की कार्रवाई की जाएगी। पुलिस हादसे के कारणों और निर्माण स्थल पर सुरक्षा इंतजामों की भी जानकारी जुटा रही है। वहीं, कंपनी प्रबंधन की ओर से मृतक के परिवार को लाखों रुपये का मुआवजा दिए जाने की बात सामने आई है।

बाजार में सामान लेने गए युवक पर जानलेवा हमला

एजेंसी

नोएडा। फेज-वन थाना क्षेत्र में रविवार रात दुकान पर सामान खरीदने गए एक युवक पर जानलेवा हमला किया गया। घायल युवक के मामा ने तीन लोगों को नामजद करते हुए मुकदमा दर्ज कराया है। सेक्टर-आठ स्थित जेजे कॉलोनी निवासी अरुण कुमार ने पुलिस को बताया कि उनके साथ भांजा आकाश भी रहता है। वह एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी करता है। उन्होंने रविवार रात करीब 10 बजे आकाश को बंजारा चौक स्थित मार्केट में कुछ सामान लेने के लिए भेजा था। वहां सेक्टर-पांच निवासी फौजी, अरुण, भोला और इनके साथ कुछ अन्य लोग पहले से खड़े थे। मामूली बात पर आकाश की इन लोगों से कहासुनी हो गई। आरोपियों ने गाली-गलौज शुरू कर दी। विरोध करने पर आरोपियों ने आकाश पर जानलेवा हमला करते हुए मारपीट की। उसे घायल कर दिया। आरोपी जाते समय जान से मारने की धमकी देकर गए। घायल युवक का अस्पताल में उपचार चल रहा है। पुलिस का कहना है कि शिकायत के आधार पर मुकदमा दर्ज कर लिया है। जांच कर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

मुथूट फाइनेंस के बाहर सोना परखने के नाम पर ठगी, 13.5 ग्राम सोना लेकर फरार

एजेंसी

नोएडा। कासना कोतवाली क्षेत्र में सोने की गुणवत्ता जांच कराने का झांसा देकर एक युवक से 13.5 ग्राम सोना ठग लिया गया। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने एक नामजद और एक अज्ञात के खिलाफ धोखाधड़ी की धाराओं में प्राथमिकी दर्ज की है। दनकौर थाना क्षेत्र के कस्बा बिलासपुर निवासी रोहित चौहान ने पुलिस को बताया कि उन्होंने 2 जुलाई को कासना स्थित मुथूट फाइनेंस में 13.5 ग्राम सोना रखकर एक लाख रुपये का लोन लिया था। आरोप है कि बैंक के बाहर कुछ लोग उन्हें मिले। इनमें से एक ने अपना नाम नीतिश वर्मा बताया और सोने की गुणवत्ता जांचकर पैसे देने का वादा किया। रोहित के मुताबिक 30 जुलाई को इनमें से एक युवक उनके साथ बैंक गया और सोना छुड़वाया। उसने रोहित को एक लाख 20 हजार रुपये दिए और गाड़ी में बैठाकर थोड़ा आगे ले गया। उसने कहा कि कंपनी में सोने की असली गुणवत्ता जांचकर शेष रकम दे दी जाएगी। उसके बाद आरोपी 13.5 ग्राम सोना लेकर चले गए। पीड़ित का कहना है कि बातचीत में गड़बड़ी लगने पर उन्होंने व्हाट्सएप पर उसी दिन आरोपियों से रुकने को कहा। उन्होंने साथ चलकर खुद गुणवत्ता देखने की बात भी कही। आरोप है कि आरोपियों ने 10 से 15 दिन में रिपोर्ट भेजने की बात कहकर टालमटोल की। इसके बाद फोन उठाना बंद कर दिया और नंबर व व्हाट्सएप दोनों पर ब्लॉक कर दिया। सोने की कीमत करीब दो लाख रुपये बताई गई है। वहीं कोतवाली प्रभारी पंकज शर्मा का कहना है

जोड़ाफूल की जगह फुटबॉल, लाखों के झंडे अटके

चुनावी प्रतीक बदलने के बाद हावड़ा के झंडा कारीगरों को कारोबार में नुकसान

हावड़ा: तृणमूल कांग्रेस के पारंपरिक जोड़ाफूल चुनाव चिन्ह को लेकर चुनाव आयोग के हालिया फैसले के बाद इसका असर हावड़ा के झंडा कारीगरों के कारोबार पर भी पड़ने की बात सामने आई है। चुनाव आयोग ने तृणमूल कांग्रेस के मूल नाम और 'फूल एवं घास' चुनाव चिन्ह को आगामी उपचुनावों के लिए अंतरिम रूप से फ्रीज किया है। इसके बाद ममता बनर्जी के नेतृत्व वाले गुट को फुटबॉल प्लेयर चुनाव चिन्ह आवंटित किया गया है।

हावड़ा के एक झंडा कारीगर राजू के मुताबिक, अब तक तृणमूल कांग्रेस के चुनाव चिन्ह के रूप में जोड़ाफूल वाले झंडों की काफी मांग रहती थी। इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने बड़ी संख्या में जोड़ाफूल वाले छोटे बड़े सभी तरह के झंडे तैयार कर रखे थे। उनका दावा है कि करीब एक लाख से अधिक झंडे तैयार थे, जिन्हें आने वाले चुनाव में इस्तेमाल किए जाने की उम्मीद थी। राजू का कहना है कि चुनाव चिन्ह में बदलाव के बाद तैयार किए गए इन झंडों की मांग अचानक कम हो गई है। उनके मुताबिक, बड़ी संख्या में तैयार झंडे अब इस्तेमाल के इंतजार में पड़े हैं और इससे झंडा कारोबारियों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है।

उन्होंने कहा कि झंडा बनाने वाले कारीगर चुनाव के दौरान राजनीतिक दलों के प्रतीकों और झंडों की मांग के आधार पर पहले से तैयारी करते हैं। ऐसे में चुनाव चिन्ह में अचानक बदलाव होने से पहले से तैयार सामग्री का इस्तेमाल कर पाना सम्भव नहीं होता है।

चुनाव आयोग के फैसले के तहत आगामी उपचुनावों के लिए ममता बनर्जी के गुट को 'फुटबॉल' और दूसरे गुट को 'लिफाफा' चुनाव चिन्ह आवंटित किया गया है। यह व्यवस्था फिलहाल अंतरिम है और मूल पार्टी के नाम एवं प्रतीक को लेकर अंतिम निर्णय बाद में होना है।

ऐसे में हावड़ा के झंडा कारीगर अब नए चुनाव चिन्ह की मांग के आधार पर अपने कारोबार में बदलाव की तैयारी कर रहे हैं। लेकिन इसके साथ ही व्यापार में हुए नुकसान को लेकर भी उनकी मुश्किलें काफी गहरी।

शरतचंद्र की 'पथेर दाबी' के 100 वर्ष

पर्दे पर 'एम्परर वर्सेस शरतचंद्र'

उलबेड़िया: अमर कथाकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के कालजयी उपन्यास 'पथेर दाबी' के प्रकाशन के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर निर्देशक सृजित मुखर्जी की नई फिल्म 'एम्परर वर्सेस शरतचंद्र' बनाई गई है। यह फिल्म आगामी 15 अक्टूबर को रिलीज होने वाली है।

फिल्म की रिलीज से पहले हावड़ा जिले के बागनान स्थित देउल्टी के सामताबेड़ में शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के घर के पास एक कार्यक्रम आयोजित कर फिल्म का ट्रेलर जारी किया गया।

गुरुवार की शाम आयोजित इस कार्यक्रम में फिल्म के निर्देशक सृजित मुखर्जी, अभिनेता अबीर चट्टोपाध्याय, टोटा रॉय चौधरी सहित फिल्म के अन्य कलाकार उपस्थित रहे। फिल्म में शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की भूमिका अभिनेता टोटा रॉय चौधरी ने निभाई है। वहीं, रवींद्रनाथ टैगोर की भूमिका में संजय नाग नजर आएंगे, जबकि सब्यसाची मल्लिक के किरदार में अबीर चट्टोपाध्याय ने अभिनय किया है। गौरतलब है कि अमर कथाकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने अपने जीवन के अंतिम लगभग 12 वर्ष सामताबेड़ गांव स्थित अपने आवास में बिताए थे।

उनके जीवन और साहित्य से जुड़े इस ऐतिहासिक स्थान पर फिल्म का ट्रेलर जारी किया जाना कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रहा। साथी सिनेमा में काम करने वाले अभिनेता और खासकर निर्देशक श्रीजीत ने लोगों से आग्रह किया की दुर्गा पूजा के दौरान व सिनेमा को देखें सिनेमा में इतिहास देखने को मिलेगा आशा करते हैं कि लोगों को पसंद यह फिल्म पसंद आएगी, यह सिनेमा बंगाल के इतिहास को दर्शाता है उस दौड़ में जब एक किताब लिखे जाने पर अंग्रेजों के द्वारा उसे प्रतिबंधित कर दिया गया था।

हावड़ा मैदान में फुटपाथी कारोबारियों से मिले पीएम के सलाहकार तरुण कपूर

प्रधानमंत्री के सलाहकार तरुण कपूर ने शनिवार को हावड़ा मैदान इलाके का दौरा कर फुटपाथ और सड़क किनारे छोटे-छोटे खुदरा कारोबार करने वाले व्यवसायियों से मुलाकात की। उन्होंने कारोबारियों का हालचाल जाना और केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत उन्हें मिल रही सुविधाओं के बारे में जानकारी ली।

इस दौरान तरुण कपूर ने कारोबारियों से पूछा कि क्या उन्हें प्रधानमंत्री की योजनाओं के तहत ऋण सहित अन्य सुविधाओं का लाभ मिल रहा है या नहीं। साथ ही, कारोबार के दौरान उन्हें किसी तरह की परेशानी अथवा सरकारी सुविधा से जुड़ी समस्या तो नहीं है, इसकी भी जानकारी ली। कारोबारियों ने अपनी समस्याओं और जरूरतों से उन्हें अवगत कराया।

कारोबारियों के मुताबिक, बातचीत के दौरान उन्हें बताया गया कि उन्हें एक प्रमाणपत्र दिया जाएगा। कारोबारियों का कहना है कि इस प्रमाणपत्र के माध्यम से उनके व्यवसाय को लेकर उन्हें सुरक्षा और सुविधा मिलने की उम्मीद है। केंद्र सरकार की पहल से छोटे कारोबारियों ने संतोष जताया।

फुटपाथी कारोबारियों से बातचीत के बाद तरुण कपूर हावड़ा नगर निगम पहुंचे। वहां उन्होंने निगम के अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में छोटे कारोबारियों को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं, प्रधानमंत्री की योजनाओं के क्रियान्वयन तथा आम लोगों को केंद्र सरकार की योजनाओं का लाभ मिल रहा है या नहीं, जैसे विषयों पर जानकारी ली गई।

सूत्रों के अनुसार, दौरे के दौरान जुटाई गई जानकारी प्रधानमंत्री कार्यालय तक पहुंचाई जा सकती है। खासकर पश्चिम बंगाल में सत्ता परिवर्तन के बाद केंद्र सरकार की योजनाओं और सुविधाओं का लाभ आम लोगों तक किस स्तर तक पहुंच रहा है, इस संबंध में भी जानकारी साझा किए जाने की संभावना है।

चुनाव से पहले बड़ा ऐलान

संपत्ति कर पर लागू होगी वेवर स्कीम

हावड़ा: आगामी नवंबर में होने वाले हावड़ा नगर निगम चुनाव से पहले बड़ा ऐलान किया गया है। हावड़ा नगर निगम क्षेत्र के निवासियों के संपत्ति कर पर वेवर स्कीम लागू होने जा रही है। राज्य के शहरी विकास विभाग के राज्यमंत्री उमेश राय ने मंगलवार को यह जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि पूजा से पहले ही हावड़ा नगर निगम क्षेत्र में वेवर स्कीम लागू कर दी जाएगी। इस संबंध में मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के नेतृत्व में होने वाली कैबिनेट बैठक में निर्णय लिया जाएगा। उमेश राय ने कहा कि लंबे समय के बाद हावड़ा नगर निगम में यह स्कीम शुरू की जा रही है। इसका लाभ उन नागरिकों को मिलेगा, जिन्होंने लंबे समय से नगर निगम का टैक्स जमा नहीं किया है और इस कारण उनके बकाया टैक्स की राशि काफी बढ़ गई है। इस योजना के तहत कुल बकाया राशि पर लगने वाले ब्याज और पेनल्टी पर 100 प्रतिशत छूट दी जाएगी। इसके अलावा मूल टैक्स पर भी 10 प्रतिशत की छूट मिलने का प्रावधान होगा। हालांकि, इसका लाभ उठाने के लिए पूरी राशि का भुगतान एकमुश्त करना होगा।

राज्य सरकार का मानना है कि इस योजना से करदाताओं को काफी राहत मिलेगी और वे अपने लंबे समय से लंबित संपत्ति कर का भुगतान कर सकेंगे। यह पूछे जाने पर कि क्या यह फैसला नगर निगम चुनाव को ध्यान में रखकर लिया गया है, उमेश राय ने कहा कि इसका नगर निगम चुनाव से कोई संबंध नहीं है। उन्होंने कहा कि लोगों को बेहतर नागरिक सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से यह निर्णय लिया जा रहा है।

हावड़ा में फिर चला बुलडोजर

पूर्व तृणमूल विधायक के कार्यालय ध्वस्त

हावड़ा: शहर में एक बार फिर बुलडोजर अभियान चलाया गया। इस बार उत्तर हावड़ा के पूर्व तृणमूल कांग्रेस विधायक और हावड़ा जिला सदर के पूर्व अध्यक्ष गौतम चौधरी के कार्यालय को बुलडोजर से तोड़ दिया गया।

नगर निगम के कर्मचारी बुलडोजर लेकर उत्तर हावड़ा स्थित गौतम चौधरी के कार्यालय पहुंचे और अवैध निर्माण के खिलाफ कार्रवाई की। आरोप है कि गंगा किनारे अवैध निर्माण कर यह पार्टी कार्यालय बनाया गया था।

कार्रवाई से स्थानीय लोग खुश नजर आए। स्थानीय लोगों का आरोप है कि रात के अंधेरे में इस कार्यालय में असामाजिक गतिविधियां होती थीं और यहां शराब की महफिल भी जमती थी। भाजपा नेता रवि साव ने कहा कि गंगा किनारे यहां एक पवित्र मंदिर स्थित है और मंदिर से सटे तृणमूल कांग्रेस के इस अवैध कार्यालय का निर्माण किया गया था। इसे तोड़कर मंदिर के सामने का हिस्सा खाली कर दिया गया है। अब श्रद्धालु यहां आसानी से आ सकेंगे और नाम-संकीर्तन भी हो सकेगा। वहीं, कभी प्रभावशाली तृणमूल नेता रहे गौतम चौधरी ने फोन पर जानकारी देते हुए कहा की हावड़ा नगर निगम इसे अवैध निर्माण बताया है।

सत्ता परिवर्तन के बाद प्रशासन अवैध निर्माण के खिलाफ लगातार कार्रवाई कर रहा है। इसी क्रम में इस अवैध निर्माण को भी ध्वस्त किया गया। प्रशासनिक सूत्रों के अनुसार, आने वाले दिनों में भी अवैध निर्माण के खिलाफ यह अभियान जारी रहेगा।

मारपीट के विरोध में सपा का प्रदर्शन

हावड़ा के शिवपुर थाना इलाके में बीजेपी माइनॉरिटी सेल के अध्यक्ष सिकंदर खान और एक अन्य गुट के बीच हुए विवाद के दौरान 36 नंबर वार्ड में कार्यरत समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता एमडी नायाब अंसारी के साथ कथित तौर पर मारपीट और उनकी गाड़ी में तोड़फोड़ का मामला सामने आया है।

घटना के विरोध में समाजवादी पार्टी हावड़ा जिला की ओर से शिवपुर थाने के सामने डेपुटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। हावड़ा जिला समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिल खान की अगुवाई में आयोजित कार्यक्रम में दक्षिण हावड़ा समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष साइस सुल्तान सहित अन्य कार्यकर्ता और समर्थक मौजूद रहे।

सपा नेताओं ने घटना में शामिल आरोपी सिकंदर खान के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग करते हुए शिवपुर थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई। प्रदर्शनकारियों ने पुलिस से मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने की मांग की।

मारपीट में घायल एमडी नायाब अंसारी ने आरोप लगाया कि मौके पर शिवपुर थाना पुलिस मौजूद नहीं होती तो उन्हें गंभीर रूप से पीटकर अस्पताल में भर्ती कराने की कोशिश की जा सकती थी। उन्होंने पुलिस की मौजूदगी के लिए अधिकारियों का आभार जताया।

CLASSIFIED AND NOTICE

My Clients SARFARAZ AHMED, s/oMd. Muslim, residing at 15, Basiruddin Munshi Lane, P.S & P.O & Dist- Howrah-711101 & WASIM RAHMAN, s/o- Abdul Rahman, residing at 34, Belilious Road, P.S & P.O & Dist-Howrah-711101, want to publish an advertisement as follows -

LEGAL NOTICE

AS PER ORDER OF LAND & LAND REFORMS DEPARTMENT, GOVT. OF WEST BENGAL, VIDE MEMO. NO: 1000-18/22/2024 My Clients, SARFARAZ AHMED, s/oMd. Muslim & WASIM RAHMAN, s/oAbdul Rahman have purchased a Bastu Land measuring about 03 Cottah 06 Chittacks 00 Sq. ft. together with 1000 sq. ft. G+1 Pucca Structures standing thereon (500 sq. ft. on the ground floor & 500 sq. ft. on the 1st floor) lying and situated at Mouza-Howrah Town Survey Unit, Bantra Sheet no- 39, J.L- 01, and comprised in L.R Dag No. 27, under L.R Khatian No. 100, within the local limit of H.M.C ward no. 21, being the premises no. 53/1, I R Belilious Lane, P.S- Bantra, Dist- Howrah, vide Registered Sale deed being no 1-050203372/2025, at the office A.D.S.R. Howrah, Book no- 1, Vol. no. 0502-2025 From PRAKASH KUMAR KEWAT, s/o- Hiralal Kewat, & ANITA KEWAT, w/o- Praskash Kumar Kewat, both residing at 49/1, Madhusudan Biswas Lane, P.S & P.O & Dist- Howrah 711101, who have jointly purchased the said property by Virtue of Sale deed being no 1-050209810/2023, at the office A.D.S.R. Howrah, Book no- 1, Vol. no. 0502-2023 from KALPANA CHATTERJEE, w/o- Late Rabindranath Chatterjee, SANGHMITRA DASGUPTA, w/o-Anjan Dasgupta, both residing at 52, Lower Andul Road, Lemon Botany Housing Complex, P.S- Sankrail, Dist- Howrah 711109, for self and as lawfully constituted attorney of MADHU CHHANDA SRIVASAN @ MADHU CHHANDA SRINIVASAN, w/o- Srinivasan Thirukurungudi Venkatachari, by registered a General power of Attorney being No-1-051303707 of 2023, at the office of D.S.R- II, Howrah, Volume No-0513-2023. My client filed mutation of the above said property before B.L & L.R.O office, Howrah vide mutation case no MN/2026/0515/1573 If anyone want to contest the mutation they can appear before B.L & L.R.O office, within 30 Days of Publishing this notice or

Sd/-

Somali Saha Advocate

Contant no 9331123775

बात हिंदुस्तान की अखबार से जुड़ने, खबर को प्रसारित करवाने एवं विज्ञापन देने के लिए संपर्क करें 9798848926

NAME CHANGE

I, Ramjee Ram, son of Lakhi Ram, residing at Shankar Pur, Odrai, Ghazipur, Uttar Pradesh - 275202, do hereby solemnly affirm and declare that my son's correct name is Shaurya Kumar DOB 15th March 2011 and Shaurya Kumar and Shourya Kumar Bharti is the same and one identical person via affidavit in the Court of Ld Judicial Magistrate 1st Class at Alipore dated 31st August 2026.

डोमजुड़ में धर्मांतरण के आरोप से हड़कंप

हावड़ा के डोमजुड़ थाना क्षेत्र के लालबाड़ी इलाके में धर्मांतरण की कथित गतिविधि को लेकर हड़कंप मच गया। आरोप है कि इलाके में कुछ हिंदू महिलाओं और छोटे बच्चों को जुटाकर उन्हें ईसाई धर्म में धर्मांतरण कराने की प्रक्रिया चल रही थी। सूचना मिलने के बाद स्थानीय लोगों ने मौके पर पहुंचकर विरोध जताया और पुलिस को इसकी जानकारी दी। स्थानीय लोगों के अनुसार, मौके पर पहुंचने पर वहां बाइबल सहित कुछ धार्मिक सामग्री दिखाई दी। इसके बाद डोमजुड़ थाने की पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया और मामले की जांच शुरू कर दी।

पुलिस ने मामले में तीन धर्मगुरुओं को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की है। हालांकि, धर्मांतरण के आरोपों की वास्तविकता और वहां चल रही गतिविधियों की आधिकारिक पुष्टि जांच पूरी होने के बाद ही स्पष्ट होगी।

पुलिस यह पता लगाने में जुटी है कि मौके पर किस तरह की गतिविधियां चल रही थीं, वहां कौन-कौन लोग मौजूद थे और कथित धर्मांतरण की प्रक्रिया में कौन-कौन लोग शामिल थे। पूरे मामले की जांच जारी है।

दक्षिणेश्वर काली मंदिर: मां भवतारिणी की महिमा

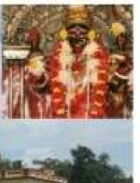

पुष्पा साव: हुगली नदी के पूर्वी तट पर स्थित दक्षिणेश्वर काली मंदिर पश्चिम बंगाल के प्रमुख धार्मिक और ऐतिहासिक स्थलों में से एक है। मंदिर की अधिष्ठात्री देवी श्रीश्री भवतारिणी काली हैं। अपनी धार्मिक परंपरा, वास्तुकला और श्रीरामकृष्ण परमहंस से जुड़े आध्यात्मिक इतिहास के कारण यह मंदिर देश-विदेश के श्रद्धालुओं के बीच प्रसिद्ध है।

1847 में शुरू हुआ था निर्माण

दक्षिणेश्वर काली मंदिर का निर्माण रानी रासमणि ने कराया था। मंदिर के निर्माण की शुरुआत 1847 में हुई और करीब आठ वर्षों के बाद 31 मई 1855 को स्नान यात्रा के शुभ अवसर पर मंदिर में देवी की प्रतिष्ठा की गई। मंदिर परिसर बंगाल की पारंपरिक नवरत्न वास्तुशैली में बनाया गया है।

क्यों प्रसिद्ध है दक्षिणेश्वर मंदिर?

दक्षिणेश्वर मंदिर की सबसे बड़ी विशेषताओं में इसका श्रीरामकृष्ण परमहंस से गहरा संबंध शामिल है। उन्होंने इसी मंदिर में मां काली की साधना की थी। मंदिर परिसर में आज भी श्रीरामकृष्ण से जुड़े कई महत्वपूर्ण स्थान श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र हैं। इसी आध्यात्मिक विरासत के कारण दक्षिणेश्वर केवल एक मंदिर ही नहीं, बल्कि बंगाल के धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास का महत्वपूर्ण केंद्र माना जाता है।

मंदिर परिसर की खासियत

मुख्य काली मंदिर के अलावा परिसर में 12 शिव मंदिर और राधाकांत मंदिर भी हैं। मुख्य मंदिर नौ शिखरों वाली नवरत्न शैली में निर्मित है। मंदिर परिसर का विस्तार काफी बड़े क्षेत्र में है और हुगली नदी के किनारे इसका धार्मिक वातावरण श्रद्धालुओं को विशेष रूप से आकर्षित करता है।

दुर्गा पूजा के समय क्या होता है?

दक्षिणेश्वर में पूरे वर्ष अलग-अलग धार्मिक उत्सव मनाए जाते हैं। शारदीय दुर्गा पूजा के दौरान महालया से लेकर षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी और विजयादशमी तक मंदिर के धार्मिक कैलेंडर में विशेष आयोजन होते हैं। हालांकि दक्षिणेश्वर की मुख्य आराध्या मां भवतारिणी काली हैं, इसलिए यहां काली पूजा और श्यामा पूजा का विशेष धार्मिक महत्व है। मंदिर की आधिकारिक 2026 कैलेंडर में दुर्गा षष्ठी से विजयादशमी और उसके बाद 8 नवंबर को श्रीश्री श्यामा पूजा (दीपान्विता) दर्ज है।

यहां कौन-कौन सी प्रमुख पूजा होती है?

दक्षिणेश्वर मंदिर में प्रमुख रूप से काली पूजा/श्यामा पूजा, फलहारिणी काली पूजा और रटंती काली पूजा जैसे विशेष धार्मिक आयोजन होते हैं। मंदिर की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार ये तीनों प्रमुख काली पूजाएं मंदिर की स्थापना के समय से ही परंपरा का हिस्सा रही हैं। इसके अलावा स्नान यात्रा, रामकृष्ण जयंती, महाशिवरात्रि और अन्य धार्मिक पर्व भी मनाए जाते हैं।

दर्शन और पूजा का समय

मंदिर की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार सामान्य दिनों में श्रद्धालुओं के लिए दर्शन का समय इस प्रकार है—

सुबह: 6:30 बजे से दोपहर 12:30 बजे तक

शाम: 3:30 बजे से शाम 7:30 बजे तक

दैनिक पूजा-अर्चना में मंगल आरती सुबह 4 बजे, दोपहर 12:30 बजे भोग अर्पण, संध्या आरती शाम 6:30 बजे तथा रात 8 बजे शीतल भोग और शयन का कार्यक्रम बताया गया है। मंदिर प्रबंधन आवश्यकता के अनुसार समय में बदलाव कर सकता है।

श्रद्धालुओं के लिए जरूरी जानकारी

मंदिर में प्रवेश से पहले सुरक्षा जांच की व्यवस्था है। श्रद्धालुओं को जूते-चप्पल निर्धारित स्थान पर रखने और मंदिर की व्यवस्था के अनुसार कतार में दर्शन करने की सलाह दी जाती है। आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार गर्भगृह के अंदर फोटोग्राफी की अनुमति नहीं है।

आस्था के साथ इतिहास की भी पहचान

दक्षिणेश्वर काली मंदिर आज धार्मिक आस्था के साथ-साथ बंगाल की संस्कृति और इतिहास की पहचान बन चुका है। रानी रासमणि द्वारा स्थापित यह मंदिर मां भवतारिणी की भक्ति, श्रीरामकृष्ण परमहंस की साधना और बंगाल की आध्यात्मिक परंपरा से जुड़ी विरासत को आज भी जीवित रखे हुए है। हर वर्ष बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहां मां के दर्शन और पूजा-अर्चना के लिए पहुंचते हैं।

स्वत्वाधिकारी 'बात हिन्दुस्तान की' (पाक्षिक) पेपर के लिए मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती सोनी कुमारी झा, 23 रामकुमार गांगुली लेन, 2रा तल्ला कमरा नं. 203, पोस्ट- बी. गार्डेन, शिवपुर, हावड़ा-711103 (प. बंगाल) फोन नं.: 8902221434 से प्रकाशित एवं एल.एस पब्लिकेशन्स प्रा. लि.4, कैनल वेस्ट रोड, कोलकाता -700015 से मुदित, सम्पादक- वैद्यनाथ झा, फोन-9798848926 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के उत्तरदायी, ईमेल/वेबसाईट - www.baathindustanki@gmail.com
(Owner, Printer & Publisher of 'Baat Hindustan ki' Smt. Soni Kumari Jha, 223, Ramkumar Ganguly Lane, 2nd floor, room no-203, PO_R.Garden, Shibpur, Howrah-711103, Mo. 9798848926 & Printed from L.S. publication private limited.4 no, canel west road, Kolkata 700015, Editor: Baidyanath Jha Mo. 9798848926, Email/Website: www.baathindustanki@gmail.com